पाठ – तरुण के स्वप्न

पाठ सार

सुभाष चंद्र बोस ने देशबंधु चित्तरंजन दास के सपनों से प्रेरित होकर एक नए, स्वतंत्र और विकसित भारत का स्वप्न देखा। वे ऐसा समाज चाहते थे जहाँ जातिवाद, असमानता और शोषण न हो, स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार मिले, हर व्यक्ति को शिक्षा और उन्नति का अवसर प्राप्त हो तथा आलस्य और कामचोरी के लिए कोई स्थान न रहे। बोस के अनुसार भारत को आदर्श समाज और आदर्श राष्ट्र बनकर विश्व के सामने उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। वे इस स्वप्न की पूर्ति हेतु प्राणों का बलिदान देने को भी तैयार थे। यह स्वप्न उनके लिए अमूल्य धरोहर था जिसे वे भारतीय युवाओं को सौंपना चाहते थे।

शब्दार्थ –

स्वर्गीय – जिसका निधन हो चुका हो, जो अब जीवित न हो, मृत
उत्स – जल का स्रोत, निर्झर, झरना
निर्झर – पानी का झरना, जल-प्रपात
उत्तराधिकारी – वारिस
आदर्श – प्रतिमान, नमूना
सर्वांगीण – जो सभी अंगों से युक्त हो, हर दृष्टि से या हर बात में
स्वाधीन – स्वतंत्र
संपन्न – पूर्णतः विकसित
उपभोग – किसी वस्तु का इस्तेमाल या व्यवहार, इस्तेमाल या व्यवहार का सुख, विषय-सुख
अर्थ – धन, संपत्ति
विषमता – कठिनाई, प्रतिकूल, विपरीत, विकट स्थिति
श्रम – मेहनत, परिश्रम
कर्म – कार्य, काम
मर्यादा – सीमा, हद, परंपरा आदि द्वारा निर्धारित सीमा
अकर्मण्य – निठल्ला, निकम्मा, कामचोर
विजातीय – भिन्न जाति या वर्ग का, दूसरी जाति का
स्वदेशी – अपने देश का, अपने देश से संबंध रखने वाला, अपने ही देश में निर्मित
यंत्र – मशीन, कल, औज़ार
सर्वोपरि – जो सबसे ऊपर या बढ़कर हो
सार्थक – जिसका कुछ अर्थ हो, अर्थवान, अर्थवाला
स्थिर – दृढ़, पक्का, निश्चल, गतिहीन
गण्य – गिनने योग्य, प्रतिष्ठित
अखंड – जिसके खंड न हों, संपूर्ण, अविभाज्य
प्रतिष्ठा – मान-मर्यादा, सम्मान, इज़्ज़त
तरुण – युवा, जवान

असीम	–	जिसकी कोई सीमा न हो, असीमित
अपार	–	अथाह, बहुत अधिक, असंख्य
क्षुद्र	–	नगण्य, महत्वहीन
उपहारस्वरूप	–	उपहार के रूप में

पाठ से

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1. "उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं।" इस कथन में रेखांकित शब्द 'हम' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) सुभाषचंद्र बोस के लिए
(ख) देश के तरुण वर्ग के लिए
(ग) चित्तरंजन दास के लिए
(घ) भारतवासियों के लिए

उत्तर:

(ख) देश के तरुण वर्ग के लिए (★)

प्रश्न 2. स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न साकार होगा—
(क) आर्थिक असमानता से
(ख) स्त्री-पुरुष के भिन्न अधिकारों से
(ग) श्रम और कर्म की मर्यादा से
(घ) जातिभेद से

उत्तर:

(ग) श्रम और कर्म की मर्यादा से (★)

प्रश्न 3. "उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं।" 'उत्तराधिकारी' होने से क्या अभिप्राय है?
(क) हमें उनके स्वप्नों को संजोकर रखना है
(ख) हमें भी उनकी तरह स्वप्न देखने का अधिकार है
(ग) उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है
(घ) उनके स्वप्नों पर चर्चा करने का दायित्व हमारा ही है।

उत्तर:

(ग) उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है (★)

प्रश्न 4. जब प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा और उन्नति का समान अवसर प्राप्त होगा तब-
(क) राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी

(ख) तरुणों का साहस बढ़ेगा
(ग) राष्ट्र स्वाधीन बनेगा
(घ) राष्ट्र स्वप्नदर्शी होगा
उत्तरः
(ख) तरुणों का साहस बढ़ेगा (★)

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर:
विद्यार्थी स्वयं करें।

मिलकर करें मिलान

नीचे स्तंभ 1 में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उन पंक्तियों से संबंधित भाव-विचार दिए गए हैं। स्तंभ 1 में दी गई पंक्तियों का स्तंभ 2 में दिए गए भाव – विचार से सही मिलान कीजिए।

क्रम	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	"इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं।"	1.	समाज में सभी व्यक्तियों को सभी तरह की स्वतंत्रता हो और उस पर किसी तरह का बंधन या सामाजिक दबाव न हो।
2.	"जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा, सर्वोपरि वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा।"	2.	हमारी समूची दिनचर्या और आचार-विचार इसी लक्ष्य (स्वप्न) की प्राप्ति पर केंद्रित हैं।
3.	"उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं।"	3.	जिस देश की योजनाएँ हमारे अपने समाज को ध्यान में रखकर बनाई जाएँगी, उस देश में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं होगा।

उत्तर:
1. 2
2. 3
3. 1

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए।
(क) "उस समाज में अर्थ की विषमता न हो।"

उत्तर:
सुभाषचंद्र बोस ने एक ऐसा स्वाधीन संपन्न समाज और राष्ट्र का स्वप्न देखा जिसमें प्रत्येक जन को समान अधिकार

मिले। जहाँ हर व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उचित अवसर व संसाधन उपलब्ध हों। आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र और आत्मनिर्भर देश बनाना चाहिए। स्वतंत्रता और राष्ट्र की उन्नति के लिए आर्थिक और सामाजिक समानता आवश्यक हैं।

(ख) "वही स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना और उनके आनंद का निर्झर रहा।"

उत्तर:

नेताजी ने अपनी मातृभूमि को साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन के बंधन से मुक्त कराने हेतु स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न और आदर्श विचारधारा को अपनाने के लिए युवा वर्ग को प्रेरित किया। नेताजी के राजनीतिक गुरु देशबंधु चित्तरंजन दास महान विचारक और स्वतंत्रता सेनानी थे। उनसे प्रेरणा लेते हुए नेताजी ने देश में आजादी की लड़ाई को दिशा दी। देशबंधु चित्तरंजन दास का स्वप्न शक्ति का स्रोत और आनंद का आधार बना।

(ग) "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो।"

उत्तर:

(ग) 'उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो', इस कथन का अर्थ है कि समाज में समानता हो। सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्तर पर हर भारतीय अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो। भारतवर्ष की आज़ादी और उन्नति में समाज समान रूप से भागीदार बने। जातिभेद समाप्त हो और नारी सशक्तिकरण हो।

सोच-विचार के लिए

अब आप इस पाठ को पुनः पढ़िए और निम्नलिखित के विषय में पता लगाकर लिखिए-

(क) नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस प्रकार के राष्ट्र निर्माण का स्वप्न देखा था?

उत्तर:

नेताजी ने सुखी, समृद्ध, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा था। ऐसा भारत जिसमें सामाजिक समानता हो, स्वदेशी उद्योग मजबूत हो और सभी दृष्टियों से मुक्त समाज राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे।

(ख) नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस लक्ष्य की प्राप्ति को अपने जीवन की सार्थकता के रूप में देखा?

उत्तर:

सुभाषचंद्र बोस ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में एक प्रमुख नेता थे। उन्होंने अपने विचारों और आदर्शों से देश के युवाओं को नई दिशा दी। अंग्रेजों से देश को स्वतंत्र कराना उनके जीवन का लक्ष्य था। राष्ट्र के निर्माण में श्रम, त्याग और बलिदान को जीवन की सार्थकता के रूप में देखा।

(ग) "आलसी तथा अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा।" सुभाषचंद्र बोस ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर:

सुभाषचंद्र बोस ने ऐसे स्वाधीन संपन्न समाज और राष्ट्र का सपना देखा था जिसमें हर व्यक्ति राष्ट्र की सेवा में समान रूप से भागीदार बने। वे देश के युवाओं में देश के लिए प्रेम, मेहनत, त्याग और समर्पण की भावना कूट-कूटकर भरना

चाहते थे। देश की उन्नति के लिए श्रम और कर्म का महत्व हो जिसमें आलसी, भ्रष्टाचारी और अकर्मण्य लोगों के लिए स्थान नहीं होना चाहिए।

(घ) नेताजी सुभाषचंद्र बोस के लक्ष्यों या ध्येय को पूरा करने के लिए आज की युवा पीढ़ी क्या – क्या कर सकती है?

उत्तर:

सुभाषचंद्र बोस के जीवन से प्रेरणा लेकर आज की पीढ़ी को स्वतंत्रता, समानता और राष्ट्रभक्ति के सच्चे मूल्यों को अपनाना चाहिए। उनके व्यक्तित्व और विचारों से प्रेरणा लेकर आज युवाओं को समाज और देश के उत्थान के लिए अग्रसर होना चाहिए। "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" के नारे से प्रत्येक भारतीय के दिल से देशभक्ति की भावना जाग्रत होती है। युवाओं को व्यक्तिगत स्वार्थों को त्यागकर राष्ट्र को अपना पूरा जीवन समर्पित करना, समाज के उत्थान और राष्ट्र की स्वाधीनता को सर्वोपरि रखने के कार्य करने का प्रयास करना चाहिए।

अनुमान और कल्पना से

(क) "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो", सुभाषचंद्र बोस ने किन-किन दृष्टियों से मुक्ति की बात की होगी?

उत्तर:

सुभाषचंद्र बोस ने सपना देखा था, एक ऐसे राष्ट्र का जहाँ समान अवसरों और संसाधनों का वितरण हो। उनका लक्ष्य सामाजिक, आर्थिक असमानताओं को खत्म करना था। उन्होंने अपने स्वतंत्रता प्राप्ति और समृद्ध समाज के लक्ष्य में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को महत्व दिया। सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्य और स्वदेशी आधार पर राष्ट्र निर्माण करने का प्रयास किया। उस समाज में आलसी, अकर्मण्य और भ्रष्टाचारी लोगों से मुक्ति की कामना थी।

(ख) "उस समय में नारी मुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र के पुरुषों की तरह समान अधिकार का उपभोग करे", सुभाषचंद्र बोस को अपने भाषण में नारी के लिए समान अधिकारों की बात क्यों कहनी पड़ी?

उत्तर:

स्वतंत्र भारत में सुभाषचंद्र बोस एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें सभी को समान आर्थिक लाभ और सामाजिक समानता मिले। जन्म, लिंग, जाति के आधार पर बँटवारा न हो। उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई भेदभाव नहीं किया। उन्होंने महिलाओं के सामाजिक बंधन को तोड़ने का समर्थन किया। राष्ट्र के विकास के लिए महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाना और बेहतर बनाना आवश्यक है।

(ग) आपके विचार से हमारे समाज में और कौन – कौन से लोग हैं जिन्हें विशेष अधिकार दिए जाने की आवश्यकता है?

उत्तर:

प्रगतिशील भारत के लिए समानता, शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण के मार्ग पर चलना है। आदिवासियों, किसानों, दलितों और श्रमिकों के विकास पर ध्यान देना आवश्यक है।

(घ) सुभाषचंद्र बोस देश के समस्त युवा वर्ग को संबोधित करते हुए कहते हैं- "हे मेरे तरुण भाइयो।" उनका संबोधन केवल 'भाइयो' शब्द तक ही क्यों सीमित रहा होगा?

उत्तर:

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने युवाओं को शक्ति, साहस और वीरता के प्रतीक के रूप में देखा था। युवा देश का आधार बनते हैं। अंग्रेजों से लड़ने के लिए उन्होंने आज़ाद हिंद फौज का गठन किया। हजारों युवा सैनिकों ने राष्ट्र की रक्षा का, महिलाओं की समान भागीदारी देने का संकल्प लिया और अंग्रेजों को देश से निकल जाने के लिए बाध्य किया। युवा पीढ़ी जब एकजुट होकर आगे बढ़ती है तो समाज और राष्ट्र का उत्थान होता है। शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, संचार, राजनीति, अंतरिक्ष, सेना, कृषि, उद्योग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं की सेवाएँ अनिवार्य होती हैं और युवा शक्ति से राष्ट्र का विकास संभव होता है।

(ङ) "यह स्वप्न मैं तुम्हें उपहारस्वरूप देता हूँ- स्वीकार करो।" सुभाषचंद्र बोस के इस आह्वान पर श्रोताओं (युवा वर्ग) की क्या प्रतिक्रिया रही होगी?

उत्तर:

सुभाषचंद्र बोस ने युवाओं में अपने उद्बोधनों के द्वारा शक्ति, हिम्मत और देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की भावना का संचार किया। उन्होंने देश की आजादी का स्वप्न दिखाया और उसे पूर्ण करने का पथ दिखाया । उनके आह्वान पर लाखों युवाओं ने अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ लड़ने और देश के लिए मर मिटने की भावना को जाग्रत किया और दृढ़ संकल्प की प्रतिक्रिया दी होगी।

शीर्षक

(क) आपने नेताजी सुभाषचंद्र बोस के भाषण का एक अंश पढ़ा है, इसे 'तरुण के स्वप्न' शीर्षक दिया गया है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि यह शीर्षक क्यों दिया गया होगा?

उत्तर:

स्वतंत्र और विकसित राष्ट्र देश के युवाओं का सपना होता है। देश के हर नौजवान सपना देखते हैं कि वे राष्ट्र की उन्नति में अपनी सार्थक भूमिका निभा सकें। सामाजिक और आर्थिक स्तर पर सबके साथ मिलकर तरक्की करें। इससे नेताजी सुभाषचंद्र बोस के भाषण को 'तरुण के स्वप्न' शीर्षक दिया गया है।

(ख) यदि आपको भाषण के इस अंश को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? यह भी लिखिए।

उत्तर:

शीर्षक – 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं की शक्ति' यह शीर्षक इसलिए चुना गया है क्योंकि देश का भविष्य और प्रगति युवा पीढ़ी पर होती है। उनकी प्रतिभा और शक्ति से राष्ट्र को मजबूती मिलती है। युवा अपने विचारों और ऊर्जा से समाज व देश को नई दिशा प्रदान करता है।

(ग) सुभाषचंद्र बोस ने अपने समय की स्थितियों या समस्याओं को अपने संबोधन में स्थान दिया है। यदि आपको अपनी कक्षा को संबोधित करने का अवसर मिले तो आप किन-किन विषयों को अपने उद्बोधन में सम्मिलित करेंगे और उसका क्या शीर्षक रखेंगे?

उत्तर:

कक्षा को संबोधित करने का अवसर मिलने पर मैं भारत को विकसित देश बनाने के लिए क्या करना चाहिए' विषय का चुनाव करूँगी। मेरे उद्बोधन का शीर्षक होगा- ' भारत: एक विकसित राष्ट्र'', इस संबोधन में मैं कृषि, सेना, देश की सुरक्षा, शिक्षा, रोजगार, स्टार्टअप, कौशल विकास और समान न्याय व्यवस्था के विषयों को प्रमुखता से शामिल करना चाहूँगी।

भाषा की बात

(क) सुभाषचंद्र बोस ने अपने भाषण में संख्या, संगठन या भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों के साथ उनकी विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्दों का प्रयोग किया है। उनके भाषण से विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्द ढूँढ़कर दिए गए शब्द समूह को पूरा कीजिए-

उत्तर:

अखंड	सत्य	क्षुद्र	जीवन
संपन्न	समाज	असीम	शक्ति
स्वाधीन	राष्ट्र	अपार	आनंद

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने तो उपर्युक्त विशेषताओं के साथ इन शब्दों को रखा है। आप किन विशेषताओं के साथ इन उपर्युक्त शब्दों को रखना चाहेंगे और क्यों? लिखिए।

उत्तर:

शाश्वत	सत्य
उन्नत	समाज
विकसित	राष्ट्र
उज्ज्वल	जीवन
युवा	शक्ति
सच्चा	आनंद

भारत देश को विकसित बनने के लिए उन्नत समाज और उज्ज्वल जीवन का आधार चाहिए। देश की युवा शक्ति शाश्वत मूल्यों को अपनाकर इस लक्ष्य को प्राप्त करे। भारत को सशक्त और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को पूर्ण करने में हमारा सच्चा आनंद निहित है।

विपरीतार्थक शब्द और उनके प्रयोग

(क) "और उस पर एक स्वाधीन राष्ट्र" इस वाक्यांश में रेखांकित शब्द 'स्वाधीन' का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द है 'पराधीन'। इसी प्रकार के कुछ विपरीतार्थक शब्द आगे दिए गए हैं, लेकिन वे आमने-सामने नहीं हैं। रेखाएँ खींचकर विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़े बनाइए –

उत्तर:

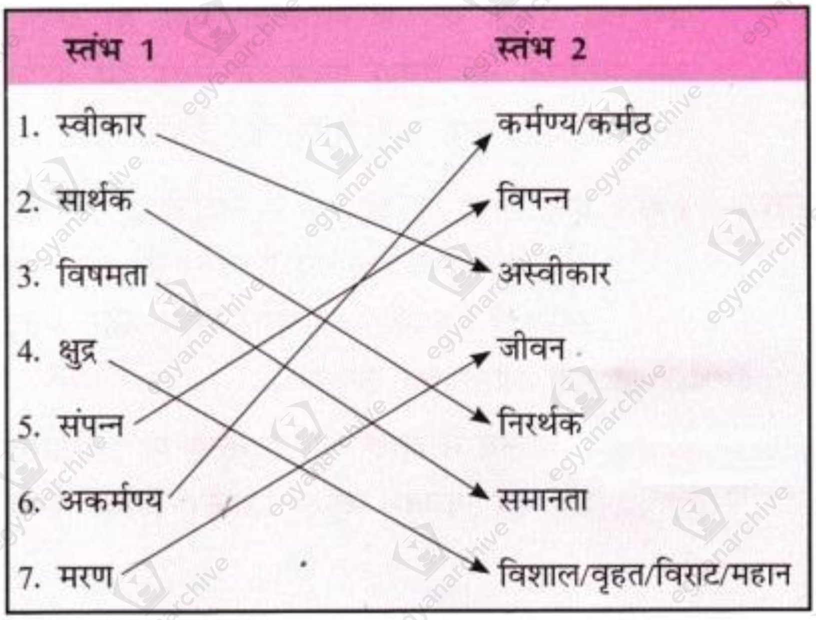

(ख) अब स्तंभ 1 और स्तंभ 2 के सभी शब्दों से दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाकर लिखिए, जैसे- "समाज की उन्नति अकर्मण्य नहीं अपितु कर्मण्य व्यक्तियों पर निर्भर है।

उत्तर:

1. मैंने उसकी सहायता करने का प्रस्ताव स्वीकार किया परंतु उसका व्यवहार मुझे अस्वीकार्य लगा।
2. हमें सार्थक जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए, निरर्थक बातों में समय बर्बाद न करें।
3. समाज में जब तक आर्थिक विषमता रहेगी, तब तक समानता की स्थापना चुनौतिपूर्ण है।
4. स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने क्षुद्र जीवन में ही विशाल / महान लक्ष्यों को प्राप्त करने का संघर्ष किया।
5. समाज में संपन्न और विपन्न का भेद-भाव समाप्त होना चाहिए।
6. अकर्मण्य लोगों को कर्मठ बनने की प्रेरणा देनी आवश्यक है।
7. देश की रक्षा के लिए मरण स्वीकार करना ही सार्थक जीवन की पहचान है।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) आपने सुभाषचंद्र बोस के स्वप्न के बारे में जाना। आप अपने विद्यालय, राज्य और देश के बारे में कैसे स्वप्न देखते हैं? लिखिए।

उत्तर:

एक छात्रा के रूप में मेरा सपना है कि दुनिया सबके लिए बेहतर बने। विद्यालय में ऐसी शिक्षा हो जो बच्चों के पूर्ण

विकास पर आधारित हो, जहाँ किसी भी प्रकार का आर्थिक या सामाजिक भेदभाव न हो। स्कूलों में लाइब्रेरी, लैब और डिजिटल सुविधाएँ हों तथा कौशल शिक्षा को बढ़ावा मिले, ताकि शिक्षा बोझ न लगे। मैं चाहती हूँ कि मेरे राज्य में गाँव और शहर दोनों में उच्च स्तर की शिक्षा उपलब्ध हो, बाल-श्रम समाप्त हो और महिलाओं की शिक्षा व सुरक्षा सुनिश्चित हो। मेरा सबसे बड़ा सपना है कि मेरा देश भारत पूरी दुनिया में आदर्श राष्ट्र के रूप में जाना जाए। यहाँ सेना का सम्मान हो, जातिवाद और ऊँच-नीच का भेद मिट जाए तथा हर नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का पालन करे। मैं चाहती हूँ कि सभी मिलकर विकसित भारत के सपने को साकार करें।

(ख) हमें बड़े संघर्षों के बाद स्वतंत्रता मिली है। अपनी इस स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए हम अपने स्तर पर क्या-क्या कर सकते हैं? लिखिए।

उत्तर:

देश की स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए हम छात्रों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। हमें जागरूक, सक्रिय और जिम्मेदार नागरिक बनने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्रप्रेम की भावना सर्वोपरि होनी चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास और स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को सम्मान देना चाहिए। अपने देश की सांस्कृतिक धरोहर और विरासत पर गर्व करना चाहिए। देश के संविधान को अच्छी तरह समझना चाहिए। राष्ट्रीय पर्वों में भाग लें और इनके महत्त्व को समझें। हम अच्छी शिक्षा प्राप्त करें क्योंकि शिक्षित और जागरूक नागरिक बनकर, राष्ट्र की उन्नति में योगदान दे सकते हैं। विज्ञान, तकनीक, स्टार्टअप या अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में भाग लेकर देश का भविष्य उज्ज्वल करें।

मिलान कीजिए

(क) नीचे स्तंभ 1 में स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित कुछ तथ्य दिए गए हैं और स्तंभ 2 में स्वतंत्रता सेनानियों के नाम दिए गए हैं। तथ्यों का स्वतंत्रता सेनानियों के नाम से रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए। इसके लिए आप अपने शिक्षकों, अभिभावकों और पुस्तकालय तथा इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	8 अप्रैल, 1929 को 'सेंट्रल असेंबली' में बम फेंकने वाले क्रांतिकारी, 'शहीद-ए-आज़म' के नाम से जाने जाते हैं।	1. सरदार वल्लभभाई पटेल
2.	'स्वराज पार्टी' के संस्थापकों में से एक, सुभाषचंद्र बोस के राजनीतिक गुरु कहे जाते हैं।	2. महात्मा गाँधी
3.	जेल में क्रांतिकारियों के साथ राजबंदियों के समान व्यवहार न होने के कारण क्रांतिकारियों ने 13 जुलाई 1929 से भूख हड़ताल शुरू कर दी। अनशन के तिरसठवें दिन जेल में इनका देहांत हो गया।	3. चंद्रशेखर आजाद
4.	इनके जन्मदिवस पर 'अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस' मनाया जाता है।	4. चित्तरंजन दास
5.	नर्मदा नदी के तट पर इनकी एक विशाल प्रतिमा स्थापित है। जिसे 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' कहा जाता है।	5. जतिन दास
6.	1921 में असहयोग आंदोलन में गिरफ्तार होने पर न्यायाधीश ने इनसे पिता का नाम पूछा तो इन्होंने कहा— "मेरा नाम आजाद है, पिता का नाम स्वतंत्रता और पता कारावास है।"	6. भगत सिंह

उत्तर:

1. 6
2. 4
3. 5
4. 2
5. 1
6. 3

(ख) इनमें से एक स्वतंत्रता सेनानी का नाम 'तरुण के स्वप्न' पाठ में भी आया है। उसे पहचान कर लिखिए।

उत्तर:

पाठ में आए स्वतंत्रता सेनानी का नाम देशबंधु चित्तरंजन दास है।

सर्वांगीण स्वाधीन संपन्न समाज के लिए प्रयास

नेताजी सुभाषचंद्र बोस और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वाधीन संपन्न समाज की स्थापना के लिए अपने समय में अनेक प्रयास किए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस दिशा में क्या-क्या उल्लेखनीय प्रयत्न किए गए हैं? अपनी सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक, अपने अनुभवों एवं पुस्तकालय की सहायता से लिखिए।

उत्तर:

छात्रगण यह गतिविधि अध्यापकों की सहायता से पूर्ण करेंगे।

भारत को एक स्वाधीन और संपन्न समाज बनाने के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अनेक उल्लेखनीय प्रयत्न किए गए हैं। इन प्रयासों ने देश को सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रयास

आर्थिक रूप से देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए।

- **पंचवर्षीय योजनाएँ:** 1951 में पहली पंचवर्षीय योजना की शुरुआत की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य देश के संसाधनों का सही उपयोग कर विकास की गति को तेज करना था। इन योजनाओं के माध्यम से कृषि, उद्योग, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे का विकास किया गया।
- **हरित क्रांति:** 1960 के दशक में, भारत में उन्नत बीजों, उर्वरकों और बेहतर सिंचाई तकनीकों का उपयोग कर कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि की गई, जिसे **हरित क्रांति** के नाम से जाना जाता है। इस क्रांति ने भारत को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया।
- **श्वेत क्रांति:** 1970 में शुरू हुए **'ऑपरेशन फ्लड'** ने भारत को दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश बना दिया। इस श्वेत क्रांति ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा किए और किसानों की आय में वृद्धि की।
- **औद्योगिक विकास और उदारीकरण:** शुरुआती वर्षों में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) की स्थापना की गई ताकि भारी उद्योगों का विकास हो सके। 1991 में आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई गई, जिसने निजी क्षेत्र को बढ़ावा दिया और भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजार से जोड़ा, जिससे विकास की दर में तेजी आई।

सामाजिक समानता और शिक्षा

समाज में समानता स्थापित करने और हर नागरिक को शिक्षा का अवसर प्रदान करने के लिए कई कानून और योजनाएँ लागू की गईं।

- **संवैधानिक प्रावधान:** भारतीय संविधान में अस्पृश्यता (छुआछूत) को समाप्त कर दिया गया और अनुसूचित जातियों (SC) तथा अनुसूचित जनजातियों (ST) के सामाजिक और शैक्षिक उत्थान के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई।
- **शैक्षिक संस्थानों की स्थापना:** देश में उच्च शिक्षा और तकनीकी विकास को बढ़ावा देने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs), भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIMs) और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) जैसे विश्वस्तरीय संस्थानों की स्थापना की गई।
- **शिक्षा का अधिकार: शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009** लागू किया गया, जिसके तहत 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित की गई।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता

वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करना भी एक प्रमुख लक्ष्य रहा है।

- **अंतरिक्ष कार्यक्रम:** 1969 में **भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)** की स्थापना की गई। आज ISRO ने चंद्रयान और मंगलयान जैसे सफल अभियानों के साथ भारत को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल कर दिया है।
- **परमाणु कार्यक्रम:** भारत ने अपने परमाणु कार्यक्रम के माध्यम से ऊर्जा और रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की। 1974 और 1998 में सफल परमाणु परीक्षणों ने भारत को एक परमाणु शक्ति के रूप में स्थापित किया।

स्त्री सशक्तीकरण

(क) सुभाषचंद्र बोस ने स्त्रियों के लिए समान अधिकार की बात की है। अपने अनुभवों के आधार पर बताइए कि उन्हें कौन-कौन से विशेषाधिकार राज्य की ओर से दिए गए हैं?

उत्तर:

स्त्रियों को विशेषाधिकार उनके हितों की रक्षा के लिए दिए गए हैं। विशेष अधिकारों का उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए प्रदान किए गए हैं।

1. **संवैधानिक अधिकार-**
    - समानता का अधिकार
    - लिंग के आधार पर भेदभाव निषेध
    - रोजगार में समान अवसर
2. **कानूनी अधिकार-**
    - दहेज निषेध अधिनियम
    - बाल विवाह निषेध
    - घरेलू हिंसा से संरक्षण
3. **विशेष योजनाएँ-**
    - बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

- सुकन्या समृद्धि योजना
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने 'आज़ाद हिंद फौज' का नेतृत्व किया था। उसमें एक टुकड़ी स्त्रियों की भी थी। उस टुकड़ी का नाम पता लगाकर लिखिए। उस टुकड़ी की भूमिका क्या थी? यह भी बताइए।

उत्तर:

सुभाषचंद्र बोस ने 'आज़ाद हिंद फौज' का नेतृत्व किया था। उन्होंने एक महिला रेजिमेंट भी बनाई जिसे रानी झाँसी रेजिमेंट कहा गया। यह नाम 1857 की क्रांति की महान नायिका रानी लक्ष्मीबाई के नाम पर रखा गया। इस टुकड़ी की भूमिका हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण है। इस टुकड़ी में शामिल महिलाओं को सैन्य प्रशिक्षण दिया गया और युद्ध के लिए तैयार किया गया। नेताजी राष्ट्र-निर्माण और प्रगतिशील भारत के लिए सामाजिक समानता और महिला सशक्तिकरण की दिशा में विशेष प्रयास किए।

आपके प्रिय स्वतंत्रता सेनानी

प्रश्न- आप किस स्वतंत्रता सेनानी के कार्यों व विचारों से प्रभावित हैं? कारण सहित लिखिए और अभिनय (रोल प्ले) करते हुए उनके विचारों को कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

मैं नेताजी सुभाषचंद्र बोस के कार्यों और विचारों से अत्यधिक प्रभावित हूँ। उन्होंने अंग्रेज़ों के अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाने का हौसला बुलंद किया। आजादी के लिए देश में नए जोश का संचार किया। नेताजी ने आज़ाद हिंद फौज (आई.एन.ए.) का गठन किया, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से भारत से बाहर निकालना था। नेताजी के ओजस्वी भाषणों ने युवा वर्ग में नवीन चेतना और स्वाधीन राष्ट्र को प्राप्त करने का संकल्प पैदा किया।

उनके द्वारा दिया गया नारा "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा" आज भी हम बच्चों को देशभक्ति से ओत-प्रोत कर देता है।

नोट – छात्र सामूहिक गतिविधि के रूप में या रोल प्ले अध्यापक की सहायता से कक्षा में प्रस्तुत करें।

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में 1944 में सुभाषचंद्र बोस ने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' नारे के माध्यम से आह्वान किया था। स्वाधीनता संग्राम के दौरान और भी बहुत से नारे दिए गए। ये नारे स्वतंत्रता सेनानियों के अदम्य साहस, निर्भीकता और देश-प्रेम को दर्शाते हैं।

नीचे स्तंभ 1 में कुछ नारे दिए गए हैं। नारों के सामने लिखिए कि यह किसके द्वारा दिया गया? आप पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

उत्तर:

नारा	स्वतंत्रता सेनानी
1. स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।	बाल गंगाधर तिलक
2. करो या मरो	महात्मा गाँधी
3. मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूँगा	चंद्रशेखर आज़ाद
4. इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद	भगत सिंह
5. पूर्ण स्वराज	जवाहरलाल नेहरु

परियोजना कार्य

आप सभी राज्यों के स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में पढ़कर उनमें से 10 महिला एवं 10 पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों का संग्रह करके एक संग्रहिका तैयार कीजिए। चित्रों के नीचे उनके विशेष योगदान के बारे में एक-दो वाक्य भी लिखिए। अपनी संग्रहिका तैयार करते समय ध्यान रखिए कि आप किसी भी राज्य से एक से अधिक व्यक्ति न चुने।

उत्तर:

महिला स्वतंत्रता सेनानियों की सूची

चित्र	महिला स्वतंत्रता सेनानी नाम	राज्य	विशेषताएँ/योगदान
	1. सरोजिनी नायडू	तेलंगाना (हैदराबाद)	'भारत कोकिला' कही जाने वाली सरोजिनी नायडू वे असहयोग आंदोलन में सक्रिय रहीं और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षा बनीं।
	2. रानी लक्ष्मीबाई	उत्तर प्रदेश (झाँसी)	1857 की क्रांति में अंग्रेज़ों के विरुद्ध वीरता से युद्ध किया। वे भारतीय वीरांगनाओं की प्रतीक हैं।
	3. भीकाजी कामा	महाराष्ट्र	पहली भारतीय महिला जिन्होंने विदेशी भूमि पर भारत का झंडा फहराया।
	4. कित्तर रानी चन्नम्मा	कर्नाटक	अंग्रेज़ों के खिलाफ 1824 में प्रत्यक्ष युद्ध की अगुवाई करने वाली महारानी रहीं। अपने राज्य को बचाने और स्वतंत्रता के लिए जनता को जागरूक किया।

	5. रानी वेलु नचियार	तमिलनाडु	रानी वेलु नचियार को वीरमंगई के रूप में जाना जाता है। वह 18वीं शताब्दी की तमिल रानी थीं, जो शिवगंगा एस्टेट की शासक थीं।
	6. उषा मेहता	गुजरात	1942 में गुप्त कांग्रेस रेडियो की शुरुआत की तथा भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रहीं।
	7. नारायणी देवी वर्मा	राजस्थान	राजस्थान की स्वतंत्रता सेनानी। मेवाड़ रियासत में ब्रिटिश और सामंती उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज़ उठाई।
	8. रानी गैदिनल्यू	मणिपुर	रानी गैदिनल्यू हेरका धार्मिक आंदोलन से जुड़ी जो अंग्रेज़ों को देश से बाहर निकालने वाला एक आंदोलन बन गया।
	9. श्रीमती सुचेता कृपलानी	अंबाला (पंजाब) (अब हरियाणा)	स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल थीं। प्रखर गाँधीवादी और संविधान सभा की सदस्य रहीं।
	10. रेणुका रे	बंगाल	स्वतंत्रता सेनानी। महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान।

पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों की सूची

चित्र	पुरुष स्वतंत्रता सेनानी नाम	राज्य	विशेषताएँ और योगदान
	1. सरदार वल्लभ भाई पटेल	गुजरात	'लौह पुरुष' के नाम से प्रसिद्ध। बारडोली सत्याग्रह और भारत की रियासतों के एकीकरण में महान भूमिका निभाई।
	2. सुभाषचंद्र बोस	उड़ीसा	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता। आज़ाद हिंद फौज का नेतृत्व किया। 'जय हिंद', "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा" के नारों से भारतीयों को स्वतंत्रता और अपने अधिकारों के लिए प्रेरित किया।

साझी समझ

उपर्युक्त पत्र में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने गृह एवं कुटीर उद्योग की बात की है। यह पत्र देश की स्वतंत्रता से पहले लिखा गया था। अपने आस-पास के गृह एवं कुटीर उद्योगों के विषय में अपने साथियों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर:

गृह एवं कुटीर उद्योग में कारीगरों द्वारा कम पूँजी और कुशलता से अपने हाथों के माध्यम से घरों में वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में इनका अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

1. हथकरघा एवं बुनाई उद्योग – घरों में कारीगर पारंपरिक करघे (हैंडलूम) के माध्यम से दुपट्टों, साड़ियों और चादरों की बुनाई करते हैं।
2. दूध उत्पादों से जुड़े उद्योग – घी, पनीर, दही का निर्माण कर उसे स्थानीय इलाकों में बेचा जाता है। कई घरों में डेयरी कार्य भी चलता है।

खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी का प्रयोग करके आप सुभाषचंद्र बोस पर आधारित फिल्म देख सकते हैं।

1. नेताजी सुभाष चंद्र बोस: द फॉरगॉटन हीरो (Netaji Subhas Chandra Bose: The Forgotten Hero)

यह श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित एक बहुत ही विस्तृत और प्रशंसित बायोपिक फिल्म है। इसमें नेताजी के जीवन के संघर्ष और उनकी सोच को गहराई से दिखाया गया है।

- **प्लेटफार्म:** यह फिल्म **YouTube** और **JioCinema** पर उपलब्ध है।
    - **YouTube लिंक:** https://youtu.be/WczVepo7fKw?si=agJa_YKeYI7xmwCM

2. बोस: डेड/अलाइव (Bose: Dead/Alive)

- 'आजाद हिंद फौज' के विषय में और अधिक जानकारी जुटाइए और अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

आजाद हिंद फौज (Indian National Army - INA), भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बनाया गया एक सशस्त्र संगठन था। इसका गठन और नेतृत्व भारतीय राष्ट्रवादियों ने किया था, जिनका मानना था कि सशस्त्र संघर्ष ही स्वतंत्रता प्राप्ति का एकमात्र मार्ग है।

गठन और नेतृत्व

- **पहला चरण (1942):** आजाद हिंद फौज का पहला गठन 1942 में मलाया (अब मलेशिया) में **कैप्टन मोहन सिंह** के नेतृत्व में हुआ था। इसमें उन भारतीय सैनिकों को शामिल किया गया था, जिन्हें सिंगापुर में जापानियों ने युद्ध बंदी बना लिया था। हालांकि, जापानी सेना के साथ मतभेदों के कारण इसे जल्द ही भंग कर दिया गया।
- **दूसरा चरण (1943 - नेताजी का आगमन):** 1943 में **सुभाष चंद्र बोस** (जिन्हें 'नेताजी' भी कहा जाता है) के सिंगापुर आगमन के साथ ही आजाद हिंद फौज का पुनरुत्थान हुआ। 21 अक्टूबर, 1943 को उन्होंने सिंगापुर में **आजाद हिंद की अस्थायी सरकार (आरज़ी हुकूमत-ए-आज़ाद हिंद)** की स्थापना की और INA के सर्वोच्च कमांडर बने। नेताजी के नेतृत्व में INA एक शक्तिशाली और प्रेरित सैन्य बल बन गया।

उद्देश्य और आदर्श वाक्य

आजाद हिंद फौज का एकमात्र उद्देश्य भारत की पूर्ण स्वतंत्रता थी। इसके सैनिकों को प्रेरित करने के लिए तीन आदर्श वाक्य दिए गए थे:

- **इत्तेहाद (एकता)**
- **इत्तमाद (विश्वास)**
- **कुर्बानी (बलिदान)**

नेताजी का प्रसिद्ध नारा **"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा!"** INA के सैनिकों और भारत के लोगों के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा स्रोत बन गया।

सैन्य अभियान

जापानी सेना के समर्थन से, आजाद हिंद फौज ने बर्मा (अब म्यांमार) के रास्ते भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाई।

- **इम्फाल और कोहिमा अभियान (1944):** INA ने जापानी सेना के साथ मिलकर भारत के उत्तर-पूर्वी सीमा पर इम्फाल और कोहिमा पर आक्रमण किया। शुरुआती सफलताओं के बावजूद, खराब मौसम, आपूर्ति की कमी और मित्र राष्ट्रों के हवाई हमलों के कारण इस अभियान को भारी नुकसान उठाना पड़ा और अंततः इसे वापस लेना पड़ा।

लाल किले का मुकदमा और अंत

द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बाद, आजाद हिंद फौज के कई सैनिकों और अधिकारियों को पकड़ लिया गया और उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया।

- **लाल किला मुकदमा (1945-46):** दिल्ली के लाल किले में INA के तीन अधिकारियों - **कर्नल प्रेम सहगल, कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लों और मेजर जनरल शाह नवाज खान** - पर मुकदमा चलाया गया। इस मुकदमे ने पूरे भारत में राष्ट्रवाद की एक शक्तिशाली लहर पैदा कर दी। जनता के भारी दबाव के कारण, ब्रिटिश सरकार को इन अधिकारियों की सजा माफ करनी पड़ी।

इस मुकदमे ने ब्रिटिश राज की नींव को हिला दिया और यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय अब अपने ही सैनिकों पर हो रहे अत्याचार को बर्दाश्त नहीं करेंगे। यद्यपि आजाद हिंद फौज सैन्य रूप से सफल नहीं हो सकी, लेकिन इसने भारत की स्वतंत्रता की भावना को जगाने और 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रक्रिया को तेज करने में एक अमूल्य योगदान दिया।